प्लेटो के सम्पत्ति विषयक साम्यवाद की विशेषताएं

प्लेटो के सम्पत्ति विषयक साम्यवाद की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–

1. यह साम्यवाद सभी नागरिकों के लिए नहीं, वरन् केवल शासक और सैनिक वर्ग के लिए है इसका उद्देश्य यद्यपि सम्पूर्ण समाज का कल्याण है किन्तु इसे सम्पूर्ण समाज के द्वारा व्यवहार में नहीं लाया जाता है।

2. इसका उद्देश्य राजनीतिक है , आर्थिक नहीं है। आधुनिक साम्यवाद की तरह इसका उद्देश्य आर्थिक विषमता दूर करना नहीं वरन् राजनीति और शासन व्यवस्था को दोषमुक्त करना है।

3. प्लेटो का साम्यवाद भोग का नहीं वरन् त्याग का मार्ग है। यह समाज के शासक वर्ग को कंचन और कामिनी का मोह छोड़कर जनकल्याण में रत रहने के लिए प्रेरित करता है।

फोस्टर के शब्दों में, " प्लेटो के संरक्षक वर्ग को सामूहिक रूप से सम्पत्ति का स्वामित्व ग्रहण करना नहीं वरन् इसका त्याग करना है।"

प्लेटो के सम्पत्ति विषयक साम्यवाद के पक्ष में तर्क

सम्पत्ति के साम्यवाद के औचित्य को सिद्ध करने के लिए प्लेटी ने नैतिक, दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, व्यावहारिक और राजनीतिक तक के रूप में अनेक आधार प्रस्तुत किये हैं, परन्तु सम्पत्ति के साम्यवाद का मूल आधार व्यावहारिक तथा राजनीतिक है। प्रमुख आधार इस प्रकार हैं–

1. मनोवैज्ञानिक आधार

प्लेटो आत्मा के तीन तत्य या विशेष गुण मानता है विवेक, शौर्ष और इन्द्रिय तृष्णा इन तीनों गुणों के आधार पर प्लेटों ने समाज को तीन वर्गों में बांटा है- शासक, सैनिक और उत्पादक वर्ग प्लेटो के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए और शासक तथा सैनिक वर्ग के लिए अपने कर्तव्य पालन के लिए आर्थिक वृत्तियों का त्याग किया जाना आवश्यक है क्योंकि यदि वे ऐसा नहीं करेंगे तो उनमें विवेक एवं शौर्य के स्थान पर इन्द्रिय तृष्णा का तत्व प्रबल हो जाएगा।

इस प्रकार शासक वर्ग में विशुद्ध विवेक तथा सैनिक वर्ग में शीर्ष बनाए रखने के लिए इन वर्गों के संबंध में सम्पत्ति विषयक साम्यवाद को अपनाना आवश्यक है।

2. दार्शनिक आधार

प्लेटो के साम्यवाद का दार्शनिक आधार कार्य विशिष्टीकरण एवं विभाजन का सिद्धांत है। इस सिद्धांत का

आशय यह है कि जिन्हें शासन जैसा महत्वपूर्ण कार्य सौंपा गया है, उन्हें ऐसे सभी सांसारिक तत्वों से बचकर रहना चाहिए जो शासन कार्य में बाधा डालते हैं धन एक ऐसा तत्व है, अत : संरक्षक वर्ग को इससे अलग रखा जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त जब शासकों का प्रशिक्षण विशिष्ट कार्य के लिए हुआ है तो उन्हें श्रेष्ठ नियमों के अधीन होना चाहिए।

3. नैतिक आधार

बार्कर के अनुसार, " सम्पत्ति के उन्मूलन के लिए जो तर्क उसने प्रस्तुत किये हैं, वे पूर्णतया नैतिक है।"

प्लेटो के राजनीतिक चिन्तन का एक प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति एवं समष्टि (राज्य-समाज) के पारस्परिक संबंधों को समुचित स्वरूप निर्धारित करने का था। यह इस गलत धारणा को समूल नष्ट करना चाहता था कि व्यक्ति का इकाई के रूप में केवल मात्र अपने सन्तोष के लिए ही अस्तित्व है। उसकी मान्यता थी कि जिस सम्पूर्ण जीवन की कामना एवं लालसा किसी व्यक्ति को होनी चाहिए। उस सम्पूर्ण जीवन को प्राप्ति केवल तभी हो सकती है जबकि व्यक्ति समष्टि (राज्य) के एक अंग के रूप में अपने अस्तित्व को स्वीकार करे और अपने योग्य स्थान तथा कार्यक्षेत्र का निर्धारण करके अपने कर्तव्यों का अत्यन्त निष्ठा के साथ पालन करे। इस प्रकार जीवन को अनुशासित करने को ही प्लेटो ने न्याय की संज्ञा दी है। साम्यवाद 'प्लेटो की दृष्टि में' न्याय के सिद्धांत का एक अनिवार्य परिणाम है, अतः राज्य के दो वर्गों दार्शनिक शासक एवं सैनिक वर्ग के लिए उपयुक्त है कि ये साम्यवाद के अनुशासन में रहें जिससे ये विकतात के साथ अपने कर्तव्यों का समुचित ढंग से पालन कर सकें।

4. व्यावहारिक आधार

प्लेटो की साम्यवादी योजना का व्यावहारिक आधार भी है। सम्पत्ति विषयक साम्यवाद को वह इसलिए आवश्यक मानता था कि राज्य की राजनीतिक शक्ति तथा आर्थिक शक्ति का एक ही हाथों में आ जाना किसी भी प्रकार से बांछनीय नहीं है। साथ ही उसमें अनेक गम्भीर खतरे छिपे हुए हैं। आर्थिक एवं राजनीतिक शक्ति का एकीकरण 'आदर्श राज्य' के अस्तित्व को बड़े भारी संकट में डाल सकता है क्योंकि यह एकीकरण शासक के विवेक को कण्ठित कर देता है। यह निःस्वार्थता, सेवा तथा कर्तव्यपरायणता को तिलांजलि देकर एक अन्धे एवं विवेकहीन की भांति अपनी समस्त राजनीतिक शक्ति का प्रयोग अधिकतम व्यक्तिगत आर्थिक लाभ के लिए करने लगता है। उसके इस प्रकार के अनुचित आचरण की प्रतिक्रिया शासित वर्ग में होती है। वे उसके अज्ञान, लोलुपता तथा स्वार्थपूर्ण व्यवहार से पूणा करने लगते हैं। समय के साथ उनमें (शासक एवं शासित) वैमनस्य की खाई बढ़ने लगती है, जिसके विकराल रूप धारण करने पर राज्य के विभाजन एवं समाज के अन्त होने तक का खतरा पैदा हो जाता है।

अतः व्यावहारिकता का यह तकाजा है कि इस प्रकार के सम्भावित खतरे से त्राण पाने के लिए शासक वर्ग को सम्पत्ति के स्वामित्व से सदैव वंचित रखा जाये।

5. राजनीतिक आधार

सेबाइन के शब्दों में, "प्लेटो का साम्यवाद मुख्यत : राजनीतिक उद्देश्य लिए हुए था।" साम्यवाद की स्थापना में प्लेटो ने अनेक राजनीतिक समस्याओं का समुचित समाधान देखा है। इस सिद्धांत से एक राजनीतिक समस्या यह हल होगी कि राज्य की एकता तथा खुशहाली निरन्तर बनी रहेगी, क्योंकि राज्य के विभिन्न वर्गों के लोगों में पद-लोलुपता से उत्पन्न प्रतिस्पर्द्धा का अभाव होगा वे अपने दायित्वों को पूरा करने में श्रेष्ठ ढंग से निरन्तर लगे रहेंगे। बार्कर ने इस सिद्धांत का राजनीतिक आधार इस कारण से माना है कि यह सिद्धांत केवल मात्र शासक वर्ग के लोगों के लिए है। अत : इसका संबंध राज्य के उन लोगों से है जिनके हाथ में राजनीतिक जीवन की बागडोर है।